ओ३म्

वैदिक सार्वदेशिक

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

वर्ष 8 अंक 31 01 से 07 अगस्त, 2013 दयानन्दाब्द 190 सृष्टि सम्वत् 1960853114 सम्वत् 2070 श्रावण कृ.-10

सं वो मनांसि सं व्रता, समाकूतोर्नमामसि।
अमी ये विव्रता स्थन, तान् वः सं नमयामसि।।

अथर्व. 3.8.5, 6.94.1

अनुशीलन : इस मंत्र में बताया गया है कि समाज को सुसंगठित कैसे बना सकते हैं?समाज को असंगठित करने वाले कौन से तत्त्व हैं और उनको कैसे अपने वश में ला सकते हैं?

समाज की एकता के लिए तीन तत्त्वों की आवश्यकता है – (1) समान विचार, (2) समान कर्म, (3) समान लक्ष्य। जब मन एक होंगे तो विचार भी एक होंगे। मानसिक एकता भावों और विचारों की एकता को लाती है। विचारों की एकता तभी सफल होगी, जब उसके अनुरूप कार्य किया जाए। मानसिक एकता और कार्य की एकता तभी संभव है, जब लक्ष्य एक हो। समाज का लक्ष्य है – समाज की सुख–समृद्धि और शांति। इसके लिए ही मन्त्र में बताया गया है कि हमारे मन, कर्म और विचार समान हों। यह समान–भावना केवल सद्विचार से आ सकती है। कुकर्मियों को विचार परिवर्तन से, कठोर दंड से, सामाजिक अनुशासन और बहिष्कार से वश में लाया जा सकता है।

मूर्ति पूजा से हानि

मूर्तिपूजा सीढ़ी नहीं, किन्तु एक बड़ी खाई है, जिसमें गिर कर चकनाचूर हो जाता है। पुनः उस खाई से निकल नहीं सकता किन्तु उसी में मर जाता है। हाँ, छोटे धार्मिक विद्वानों से लेकर परम विद्वान् योगियों के संग से सद् विद्या और सत्य भाषणादि परमेश्वर की प्राप्ति की सीढ़ियाँ हैं। ..... मूर्तिपूजा करते–करते ज्ञानी तो कोई नहीं हुआ, प्रत्युत सब मूर्तिपूजक अज्ञानी रहकर मनुष्य जन्म व्यर्थ खोके बहुत से मर गये।

– महर्षि दयानन्द सरस्वती

"वैदिक सार्वदेशिक" का सदस्यता शुल्क

एक प्रति	:	5 रुपया
वार्षिक	:	250 रुपये
आजीवन	:	2500 रुपये

वैचारिक क्रान्ति के लिए सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें।

– स्वामी अग्निवेश

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

मो. :- 09849560691, 09013251500

E-mail : sarvadeshik@yahoo.co.in

प्रति वर्ष एक करोड़ पेड़ लगायें कांवड़िये, हज़ सब्सिडी बंद करे सरकार

– स्वामी अग्निवेश

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी अग्निवेश जी ने धर्म के नाम पर तूफान खड़ा करने वाले कांवड़ियों को अधर्म और अंधविश्वास के शिकार बताकर सख्त अलोचना की है। साथ ही उन्होंने उत्तर भारत के एक करोड़ से अधिक कांवड़ियों को अपनी धार्मिक ऊर्जा द्वारा पेड़ लगाने का सुझाव दिया जिससे पर्यावरण का संतुलन ठीक होगा और आगे कभी केदारनाथ जैसी त्रासदी नहीं होगी।

''न्यूज़ नेशन'' नामक प्रसिद्ध राष्ट्रीय टी. वी. चैनल के विशेष कार्यक्रम में कार्यक्रम संचालक श्री अजय कुमार के प्रश्नों के उत्तर में आर्य संन्यासी स्वामी अग्निवेश जी ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि कांवड़ प्रथा का कोई संदर्भ किसी वैदिक शास्त्र अथवा साहित्य में नहीं मिलता और यह अंधविश्वास पर आधारित करोड़ो युवाओं को धर्म के नाम पर बरगलाने का ऐसा सुनियोजित कार्यक्रम है जिसमें लगभग सावन का पूरा महीना बर्बाद हो जाता है। कांवड़ ले जाने वाले हरिद्वार दिल्ली रोड़ 15–20 दिन के लिए अवरूद्ध कर देते हैं और लाखों लोगों को भयंकर असुविधा का सामना करना पड़ता है। जब कहीं दुर्घटना होती है–जैसा कि इस बार भी मुज़फ्फरनगर से आगे दौराला के पास एक्सीडेन्ट में तीन कांवड़ियों की मौत से गुस्साये कांवड़ियों ने सरकारी बसों और वाहनों में आग लगा दी और पुलिस प्रशासन को नियंत्रित करना कठिन हो गया। ये किस्से साल दर साल दोहराये जाते हैं पर कोई इन्हें रोकने टोकने की भी हिम्मत नहीं जुटा पाता।

कार्यक्रम में शामिल दिल्ली के पूर्व पुलिस आयुक्त श्री टी. आर. कक्कड़ ने इसका समर्थन करते हुए कहा कि राजनैतिक नेताओं द्वारा कांवड़ियों को प्रश्रय दिये जाने से पुलिस की मुसीबत बढ़ जाती है और कांवड़ियों को धार्मिक भावना का सहारा लेकर उत्पात करने की छूट मिल जाती है।

स्वामी अग्निवेश जी ने इस बात को आगे बढ़ाते हुए कहा कि राजनेता कांवड़ियों की संख्या अथवा उनके मार्ग को नियंत्रित करने के बदले उनका मार्ग प्रशस्त करते हैं और आगे बढ़कर अपने वोट बैंक की खातिर अंधविश्वास को बढ़ावा देते हुए कांवड़ियों की आव भगत के लिए पूरी कचौड़ी खिलाते हैं। उन्होंने कहा कि सरकार को किसी साम्प्रदायिक अनुष्ठान चाहे वो हिन्दुओं का हो या मुसलमानों का या ईसाई या सिखो का किसी को भी बढ़ावा नहीं देना चाहिये। इस दिशा में सभा प्रधान स्वामी

अग्निवेश जी ने मांग की कि हज़ के नाम पर हर साल भारत सरकार द्वारा दी जा रही लगभग एक हजार करोड़ रुपये की सब्सिडी बंद होनी चाहिये (प्रति हाजी 47,554 रू)।

स्वामी अग्निवेश जी द्वारा सुझाव दिया गया कि तथाकथित शिव भक्तों को ''यज्जाग्रतो दूर मुदैति दैवम् तदुसुप्तस्य तथैवेति, दूरंगमम् ज्योतिषाँ ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिव संकल्पमस्तु की भावना के अनुसार शिव संकल्प लेना चाहिये और कांवड़ ढोने के बदले केदारनाथ रामबाड़ा की घाटी में दबे शिव भक्तों के लगभग 10,000 लाशों के दाह संस्कार में सहयोग करना चाहिये और प्रत्येक कांवड़िया कम से कम एक पेड़ (पीपल या बड़ का) लगाये तो हर साल डेढ़ दो करोड़ पेड़ लगने से पर्यावरण का संकट दूर हो सकता है। स्वामी जी ने कहा कि केदारनाथ मंदिर में तो ''देवाधिदेव महादेव'' खुद मलबे में दबे पड़े हैं फिर किस महादेव पर जल चढ़ाकर कांवड़िये अपना मनोरथ पूरा कराने जा रहे हैं?

स्वामी जी के इस सुझाव का टी. वी. चैनल के पैनल पर बैठे सनातनधर्मी योगी महंत नारायण गिरी ने पुरज़ोर स्वागत किया और स्वामी जी से निवेदन किया कि कांवड़ियों की आलोचना करने के बदले उन्हें पेड़ लगाने जैसे समाजोपयोगी कामों के लिए प्रेरित करें।

कार्यक्रम में शबे बारात के मौके पर मुस्लिम बाइकर्स (मोटर साइकल पर हुड़दंग करने वाले) और गुरूपर्व पर सिख बाइकर्स के कारनामों की मज़म्मत की गई। स्वामी अग्निवेश जी ने बताया कि जमाते इस्लामी हिन्द की पत्रिका कांति में सम्पादकीय लिखकर शबे बारात के बाइकर्स की पुरजोर भर्त्सना की गई थी। उसी तरह अन्य धर्माचार्यों को भी अपनी जमात के युवकों को सन्मार्ग दिखाना चाहिए।

गरीब देश के अमीर नेता और भ्रष्टाचार

– गिरीश त्रिवेदी, पुणे, महाराष्ट

भारत एक परिवार है। हम सभी भारतीय आपस में सम्बन्धी हैं। एक की पीड़ा का दर्द दूसरे को भी होता है। एक का छोड़ा हुआ प्रश्वास दूसरा अपनाता है अर्थात् हम सब एक प्राण हैं। हमारी राष्ट्रीय एकता बड़ी मजबूत है। किसी एक क्षेत्र में कोई विपदा आन पड़ती है तो राष्ट्र के कोने–कोने से मदद के हाथ आगे बढ़ते हैं। इतना सब कुछ होते हुए भी हम भारतीयों की आर्थिक स्थिति में बड़ा भेद है। गरीब और गरीब होता जा रहा है अमीर और अधिक अमीर। इस फासले को घटाना बहुत आवश्यक है। अन्यथा यह अंतर राष्ट्र को किसी भी भयावह मोड़ पर लाकर खड़ा कर देगा। अमीर सुरक्षित नहीं रह पायेगा और आगे ऐसा कुछ भी हो सकता है जिसकी कोई कल्पना भी नहीं कर सकता और हमारे अड़ोस–पड़ोस के देश तो हमारे दुश्मन हैं ही वे तो मौके की तलाश में बैठे हैं। उन्हें भारत की प्रगति फूटी आँख नहीं सुहाती है।

भारत आजाद हुआ तब 1947 में 4.5 करोड़ लोग गरीब थे। सन् 2012 में 84 करोड़ लोग गरीब हैं अर्थात् आजादी के बाद गरीबी 21 गुना बढ़ी। जब मैं छोटा बच्चा था तब प्रायः रेडियो में भारत के

प्रधानमंत्री की मीठी–मीठी आवाज में सुना करता था 'हमें भारत से गरीबी मिटानी है' हम भारत से गरीबी मिटा देंगे' गरीबी भारत से दस वर्षों में मिट जायेगी।' मेरा बाल मन बड़ा पुलकित होता था। वाह मैं और मेरे मित्र हम सब गरीब नहीं रहेंगे। मैं बड़े हसीन सपने देखा करता था कि बिना गरीबी के मेरा भारत कैसा दिखेगा?मगर मेरी आँखे आज तक मृग–तृष्णा की तरह बिना गरीबी के भारत का सपना देख रही हैं।

हाथ से मुँह तक जाने वाला कौर बार–बार पूछता रहता है 'देश में 40 करोड़ लोग भूखे हैं और तू.....।' भारत एक परिवार हैं तो ऐसा कैसा परिवार जिसके आधे सदस्यों को भरपेट खाना नसीब नहीं। गरीब अपना ठीक से इलाज नहीं करवा सकता और पीड़ा भोगता हुआ बेमौत मर भी जाता है। गरीब के बेटे का आज की मंहगी शिक्षण पद्धति में शिक्षित हो पाना क्या सम्भव है। गरीब का मानव चोले में जन्म लेना अभिशाप बन गया है। गरीब का बेटा जब पिता के साथ चलते हुए माँग करता है कोई खिलौना खरीदने को कहता है तो पिता पहले तो अनसुनी करता है। बात नहीं बनती तो झूठ–मूठ को बच्चे को पूछता है 'बोल तुझे क्या चाहिये?' 'यह झुनझुना'। गरीब पिता व्यापारी से पूछता है 'कितने का है' जवाब मिलता है 'पंद्रह रुपये का' बच्चे के मुँह में लड्डू फूटते हैं बस अब कुछ ही पलों में यह खिलौना मेरा हो जायेगा। लेकिन पंद्रह रुपये सुनकर उस गरीब के सर पर घन पड़ता है जिसकी उसे पूर्व कल्पना थी। अब वह बच्चे को दलीलें देकर समझाता है ये तो अच्छा नहीं है मैं तुझे इससे भी अच्छा झुनझुना ला दूँगा। ये तो भद्दा है वगैरा–वगैरा। बच्चा मान जाता है तो ठीक है अन्यथा एक करारे थप्पड़ से बच्चे के खिलौना लेने की इच्छा की हत्या कर दी जाती है। बच्चा कुछ देर रोता रहता है, मगर इस बेरहम दुनिया के क्रूर गणित को समझ नहीं पाता।

पाठक वृन्द ध्यान दें आजादी के 65 वर्षों तक लगातार गरीबी मिटाने का स्वांग करने वाले भ्रष्टाचारियों ने देश के बाहर भारत का धन चार सौ लाख करोड़ रुपये जमा करवा रक्खा है। यह काला धन भ्रष्टाचार से राष्ट्र की जनता की जेब से निकलवाया हुआ पैसा है। यह 400 लाख करोड़ वाली बात तो अब जग जाहिर हो चुकी है जिसे स्वामी रामदेव जी बड़े जोर–शोर से कह रहे हैं कि यह राष्ट्र का पैसा वापस राष्ट्र में आना चाहिए और देश के विकास में लगना चाहिए।

400 लाख करोड़ रुपये अर्थात् इसमें भारत की जनसंख्या का भाग दें तो प्रति व्यक्ति 3 लाख रुपये से अधिक हुआ। 5 व्यक्तियों के परिवार का गिनें तो 16 लाख रुपया भ्रष्ट लोग दबा के बैठे हैं। यदि ये पैसा जनता से न लूटा जाता तो क्या गरीबी रहती। गरीबी के कारण अनेक सुझाए जा सकते हैं उनमें सत्यता का भास भी होता है मगर जब तक राष्ट्र में भ्रष्टाचार रहेगा गरीबी भी रहेगी। भारत एक परिवार है और हमें कतई मंजूर नहीं है कि परिवार का एक सदस्य आधा पेट सूखी रोटी खा के सोवे तो दूसरे सदस्य की पाँचों अंगुलियाँ घी में हों।

हम सभी भारतवासियों को सच्चे दिल से भारत से गरीबी उन्मूलन के लिए बस अब कमर कस लेनी है। सरकार के भरोसे रहने से कुछ नहीं होने वाला। तो क्या करना होगा?इसके लिए एक–एक नागरिक का प्रयास महत्त्वपूर्ण होगा। कुछ काम ऐसे हैं जो हमारे निजी जीवन से सम्बन्धित हैं वे हमारे व्यक्तिगत प्रयास होंगे। कुछ कार्य ऐसे होंगे जो राष्ट्र की जनता मिलकर एकता दिखाकर कर सकती है। तो हमें क्या करना चाहिए?

1. 'संगठन में शक्ति है।' इस सूत्र की सीख मानकर सभी राष्ट्रवादी भारतवासियों को सभी भेद भुलाते हुए एक नेतृत्व के नीचे संगठित होना होगा। आज देशभर में नई आजादी नई क्रान्ति का आन्दोलन चल रहा है आखिरकार हमें कम से कम 50 से 60 करोड़ लोगों का 'महासंगठन' 'राष्ट्रवादी महावोट बैंक' बनाना है। इसी से संभव होगा भारत की दरिद्रता का निवारण।

2. व्यक्तिगत स्तर पर दैनिक प्रयोग में आने वाली छोटी–छोटी वस्तुएँ जैसे साबुन, कपड़े, जूते, तेल, खाद्य पदार्थ इत्यादि ऐसे खरीदें जो छोटे स्तर पर गरीब व्यक्तियों द्वारा निर्मित हों। याद रक्खें विदेशी कम्पनियों के मॉल का बहिष्कार और छोटे आदमी को प्रोत्साहन गरीबी मिटाने में काफी हद तक कारगर सिद्ध होगा। बड़ी कम्पनियों और बड़े–बड़े ब्राण्ड नामों का मोह छोड़ क्षेत्रीय उत्पादों को जीवन में अपनाना गरीब को रोजागार देने का काम करेगा। बड़े मॉल का बहिष्कार और छोटी से छोटी दुकानों से खरीद या ठेले या हाट बाजार से खरीद भी गरीब को रोजगार देगा। क्षेत्रीय सामान जो गुणवत्ता में खरा होते हुए भी विज्ञापन युग में गुमनामी में पिछड़ जाता है, को ही अपनाना भी राष्ट्र प्रेम का एक नमूना होगा। खाद्य तेल में मल्टीनेशनल कम्पनी ने भारत भर में अपना व्यापार जमा रखा है। हमें इसे भी छोड़ ऑइल मीलों का तेल प्रयोग करना चाहिए। वस्त्रों में पूरी तरह खादी नहीं अपना सकें तो कम से कम हमारे तौलिये, चद्दर, घर में पहनने के कपड़े और बाहर के लिए भी कुछ कपड़े तो खादी के हम अपना ही सकते हैं। मात्र इससे भी बहुत फरक पड़ेगा।

3. गरीब व्यक्ति अशिक्षित बेरोजगार और भूख के मारे राष्ट्रहित और स्वहित भी नहीं सोच पाता है। उसकी ऊँचा सोचने की क्षमता दब जाती है। गरीबी व्यक्ति की बुद्धि, प्रतिभा, कान्ति, खुशी और स्वास्थ्य आदि सब कुछ हर लेती है। इस तरह के गरीब देश के नेता अमीर हैं, करोड़ों पति हैं। यह विरोधाभास क्यों?

गरीबी उन्मूलन के लिए जब सोचा जाता है तो हर किसी को गरीबी के कारण अशिक्षा, अधिक संतानों का होना, व्यसन और बेरोजगारी ही नजर आते हैं मगर ये गरीबी के कारण नहीं हैं गरीबी के कारण उत्पन्न हुई परिस्थितियाँ हैं।

भ्रष्टाचारी को शासन करना है तो सत्ता में बने रहने के लिए गरीबी ही सर्वाधिक उपयोगी है। गरीब बिक सकता है। देशहित को न सोचकर बहकावे में आकर वोट दे सकता है। झूठे वायदों में विश्वास कर सकता है तो भ्रष्टशासकों के लिए चुनाव जीतने के लिए गरीब अति उपयोगी है। यदि गरीबी मिट गई तो दो हजार में वोट बिकेगा कैसे?अतः प्रिय पाठकों अब हम जागरूक नागरिकों का कर्तव्य बनता है कि हम बिना विचारे मतदान करने वालों को, वोट बेचने वालों को ठीक–ठीक समझाएँ कि सोच विचार कर गम्भीरता पूर्वक राष्ट्रहित में निस्वार्थ भाव से मतदान करें। जो गरीब को रोजगार उपलब्ध करवाने, व्यसनों से मुक्ति दिलाने आदि में सच्चे दिल से सोच रखता हो, जिसकी कथनी और करनी में फरक न हो, जिसने पहले जनता को धोखा न दिया हो, जिसका पिछला जीवन चरित्र पारदर्शी एवं निष्कलंक हो ऐसे ही राष्ट्रभक्तों को अगले लोकसभा चुनावों में मतदान दिया और दिलवाया जाये तो गरीबी निश्चित रूप से मिट सकती है।

– सत्यार्थ सौरभ से साभार

वैदिक सार्वदेशिक के सदस्यों से निवेदन

वैदिक सार्वदेशिक पत्रिका के उन ग्राहकों से विनम्र निवेदन है जिनका वार्षिक शुल्क समाप्त हो चुका है। वे शीघ्र अपना वार्षिक शुल्क 250/- रुपये सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय में भिजवाने की व्यवस्था करें, अन्यथा भविष्य में उन्हें नियमित रूप से पत्रिका भेज पाना सम्भव नहीं हो सकेगा, और उनका नाम ग्राहक सूची से हटा दिया जायेगा। वैदिक सार्वदेशिक का वार्षिक शुल्क 250/- रुपये एवं आजीवन शुल्क 2500/- रुपये है। जो महानुभाव इस पत्रिका को मंगाना चाहें वह उपरोक्त राशि चैक/ड्राफ्ट अथवा धनादेश द्वारा ''सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा'' के नाम से सभा कार्यालय ''महर्षि दयानन्द भवन'' 3/5, आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2 के पते पर भेजें। देश-विदेश में हजारों की संख्या में भेजे जाने वाले वैदिक सार्वदेशिक को प्रति सप्ताह अपने घर पर प्राप्त करने के लिए शीघ्र सम्पर्क करें।

-व्यवस्थापक, वैदिक सार्वदेशिक

प्रगतिशील युग में भी नारी बन्धन

– डॉ. रघुवीर वेदालंकार

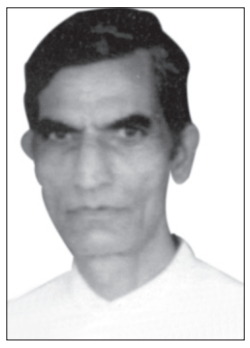

आज नारी सभी क्षेत्रों में अपने अधिकार प्राप्त कर रही हैं या कर चुकी हैं। आज न तो वह अशिक्षित है तथा न ही पहले की भांति पुरुष की भोग्या मात्र या उपेक्षिता। आज वह सुशिक्षित होकर उच्च से उच्च पदों पर प्रतिष्ठित होकर अनेक संस्थानों, राज्यों तथा पूरे देश तक को चला रही है। कार्यक्षेत्र में पुरुष एवं नारी का भेदभाव लगभग समाप्त सा है। प्राचीन भारत में भी नारी का यही स्वरूप था जो मध्यकाल में अमावस्या के चन्द्रमा की भांति तिरोहित कर पुनः पूर्णिमा के चन्द्रमा की भांति उदित होकर प्रकाश दे रहा है, किन्तु एक क्षेत्र अभी भी ऐसा है जिसमें अभी हमें तथा स्वयं नारी को बहुत कुछ करना है, और वह है दहेज की समस्या। इस दानव के चंगुल में जकड़ी हुई नारी आज भी छटपटा रही है। दहेज के अभाव में विवाह के समय उसके सभी गुण गौण हो जाते हैं।

यह एक सामाजिक एवं राष्ट्रीय रोग है। कोई कृषक, मजदूर हो या व्यापारी हो, धनाढ्य हो या निर्धन हो, राजनेता हो या धार्मिक नेता हो, सब इसमें जकड़े हुए हैं। ऐसे कुछ ही साहसी युवक–युवतियाँ हैं जो इस लौहमयी श्रृंखला को तोड़ कर दहेज मुक्त विवाह करते हैं। इसके विपरीत असंख्य युवतियाँ दहेज के अभाव में या तो अपेक्षित वर को प्राप्त नहीं कर पाती या कुंवारी ही रह जाती हैं, कुछ तो आत्महत्या भी कर लेती हैं।

इस दुरावस्था का अपराधी कौन है?कोई एक व्यक्ति या जाति नहीं, अपितु समूचा समाज तथा राष्ट्र इस अपराध का भागी है। स्वयं नारी भी इसमें सहयोगिनी है क्योंकि अधिकांश महिलाएँ ही अपने बेटे के विवाह में प्रचुर धन–सम्पत्ति लेने की न केवल इच्छा ही रखती हैं, अपितु कहीं–कहीं तो दबाव भी देती हैं। यदि घर की महिलाएँ ही तन कर खड़ी हो जायें कि हम बेटे के विवाह में दहेज नहीं लेंगी तथा बेटियाँ भी संकल्प ले लें कि दहेज लोभी से विवाह नहीं करायेंगी तो पुरुष की हिम्मत नहीं होगी कि वह दहेज ले तथा दे। पत्नी के सहयोग से लेखक ने अपने एक पुत्र तथा दो पुत्रियों के विवाह बिना दहेज ही किये हैं। सभी बच्चे सुयोग्य तथा सुखी हैं।

प्रदर्शन आज हमारा स्वभाव बन गया है। प्रदर्शन शक्ति तथा धन का। शक्ति प्रदर्शनार्थ ही रैलियाँ निकलती हैं तथा धन का प्रदर्शन विवाह आदि कार्यों में किया जाता है। इस कार्य में दहेज लेने या मांगने वाला ही दोषी नहीं, अपितु देने वाले भी समान रूप में दोषी हैं। वे स्वयं ही आवश्यकता से कहीं अधिक सामान, फ्लैट, बंगले, कई–कई मंहगी कारें तथा प्रचुर नकद राशि दहेज के रूप में देकर अपनी सम्पन्नता का प्रदर्शन करके अपना प्रभाव समाज पर जमाना चाहते हैं। कहीं–कहीं लड़के वाले दबाव देकर भी लड़की वालों से उच्च धन–सम्पत्ति लूटते हैं। जिनके पास इतनी सम्पत्ति देने के लिए नहीं होती, उनकी 30–35 साल की लड़कियाँ भी अविवाहित ही बैठी रहती हैं।

दहेज प्रकरण में बेटी तथा बेटे वाले दोनों ही समान रूप से दोषी हैं क्योंकि धनपति तथा अतुल सम्पत्ति के स्वामी अपने ऐश्वर्य, धन–सम्पत्ति के प्रदर्शनार्थ अनाप–शनाप खर्च करते हैं। इसका एक उदाहरण यहाँ दिया जा रहा है 12 फरवरी 2013 के 'नवभारत टाइम्स' में एक शीर्षक छपा है – ''शादी में नाचने के बदले सलमान ने लिए 3.5 करोड़'' आगे लिखा है – दिल्ली में हुई थी यह शानदार शादी। वैसे शादी इतनी शानदार थी कि सल्लू के अलावा दूसरे लोगों ने भी इस वैडिंग में मोटा पैसा कमाया। गौर–तलब है कि शादी से जुड़ी सारी बातें गोपनीय रखी गई थी। शादी में बारातियों के लिए डिफरेंट गेम रखे गये थे जिन्हें जीतने पर लग्जरी कार और पेरिस का दो लोगों का एयर टिकट बगैरह दिये गये।'' जब वाह्य आडम्बर पर ही दसियों लाख खर्च कर दिये तो दहेज कितना दिया होगा, इसका अनुमान नहीं किया जा सकता। एक निर्धन तथा मध्य दर्जे का व्यक्ति ऐसे प्रदर्शनों को देखकर ऋण लेकरभी अपनी सामर्थ्य से अधिक व्यय दहेज आदि के रूप में करता है।

आज का युग प्रगतिशील कहा जाता है, किन्तु इस प्रकार की कुप्रथाएँ एवं रुढ़ियाँ सम्पूर्ण समाज में व्याप्त है। कोई भी इस प्रकार की महामारियों के विनाश का यत्न नहीं कर रहा, न ही दहेज को रोकने का कोई यत्न सरकार की ओर से हो रहा है। हाँ, जबरदस्ती मांगने पर तो कुछ प्रतिबन्ध है। होना यह चाहिए कि विवाह में दहेज लेना तथा देना दोनों ही कानूनन प्रतिबन्धित होने चाहिए तथा विवाह दहेज के आधार पर न होकर गुण, कर्म, स्वभावानुसार वर्णव्यवस्था के आधार पर होने चाहिए। किन्तु प्रतिबन्ध लगाए कौन?राजनेता, अभिनेता, जननेता तथा धनाढ्य लोग सभी तो इस कुप्रथा के पोषक हैं। यहीं पर वे अपने काले धन को दुनियां की नजर में जगमगाता हीरा बनाकर दर्शकों की आँखें चुंधिया देते हैं। ऐसे समाज तथा ऐसी राज्य व्यवस्था से तो साम्यवाद ही अच्छा है जहाँ गलत काम करने वालों पर अंकुश तो है। दहेज के विरोध में तो सामाजिक संगठन बनाकर इस कुप्रथा को सर्वथा समाप्त कर देने का निश्चय करना चाहिए। अन्यथा निर्धनों तथा कम धन वालों की कन्याएँ इस महामारी के कारण छटपटाती रहेंगी तथा मरती रहेंगी। नवभारत टाइम्स में एक समाचार छपा है कि औरंगाबाद के हर्षनगर क्षेत्र में दहेज न देने पर पति तथा ससुराल वालों ने महिला की टांगे खींच कर उसे चीरने की कोशिश की। महिला को अस्पताल जाना पड़ा। 'नवभारत टाइम्स' में ही अन्य एक समाचार छपा है जो इस प्रकार है – ''यहाँ रोहिणी कोर्ट में एडीशनल सेशन जज कामिनी ने अपने फैसले में कहा कि दहेज दो तरफा है। जब तक कोई देने वाला न हो, लेने वाला नहीं होगा। इस सामाजिक बुराई को खत्म करने के लिए देने और लेने वाले दोनों को जिम्मेदार ठहराना होगा।'' माननीय जज की यह टिप्पणी ठीक इसी प्रकार की है जैसा कि सम्राट अश्वपति ने कहा था कि मेरे राज्य में कोई भी व्यभिचारी पुरुष नहीं है। ऐसी अवस्था में व्यभिचारिणी स्त्रियाँ तो हो ही नहीं सकती। इसी प्रकार यदि दहेज देने वाले न हों तो लेने वाले अपने आप ही समाप्त हो जायेंगे। किन्तु कह देने मात्र से ऐसा नहीं हो सकता। इसके लिए राष्ट्रीय स्तर पर सामाजिक क्रान्ति तथा जन–जागरण की आवश्यकता है। साथ ही कानून भी कड़ा होना चाहिए, किन्तु स्वयं कानून के रखवाले, बनाने वाले राजनेता तथा समाज का धनाढ्य वर्ग इस महामारी से ग्रस्त है तो ऐसे में सुधार की आशा कैसे की जा सकती है?किन्तु यह असम्भव भी नहीं। जिस प्रकार समाचार पत्र, सामाजिक संस्थाएं तथा राजकीय स्तर पर किये गये प्रयासों ने अबला नारी को सशक्त बनाकर पुरुष के बराबर ला खड़ा किया है, उसी प्रकार संघर्ष तथा आन्दोलन करने से दहेज उन्मूलन भी सम्भव है, किन्तु यह होगा मध्यम तथा निम्न वर्ग की ओर से ही न कि धनाढ्यों की ओर से, क्योंकि वहाँ तो धन की कोई कमी है ही नहीं, यही नहीं बहुत खर्चीली शदियाँ काले धन को सफेद करने का एक सशक्त माध्यम भी है। पिस तो केवल मध्यम तथा निम्न वर्ग रहा है। उसे ही आवाज उठानी तथा बगावत करनी होगी। लेखक ने अपने सभी बच्चों के विवाह बिना दहेज के ही किये हैं जिनमें अन्य व्यक्तियों के अलावा आर्य समाज के गणमान्य जन भी उपस्थित थे। आर्य समाज को इस दिशा में देश का नेतृत्व स्वयं वैसा आचरण करके करना चाहिए तथा आर्य समाजों में गैर–जिम्मेदार प्रेम विवाह करने बन्द करने चाहिए।

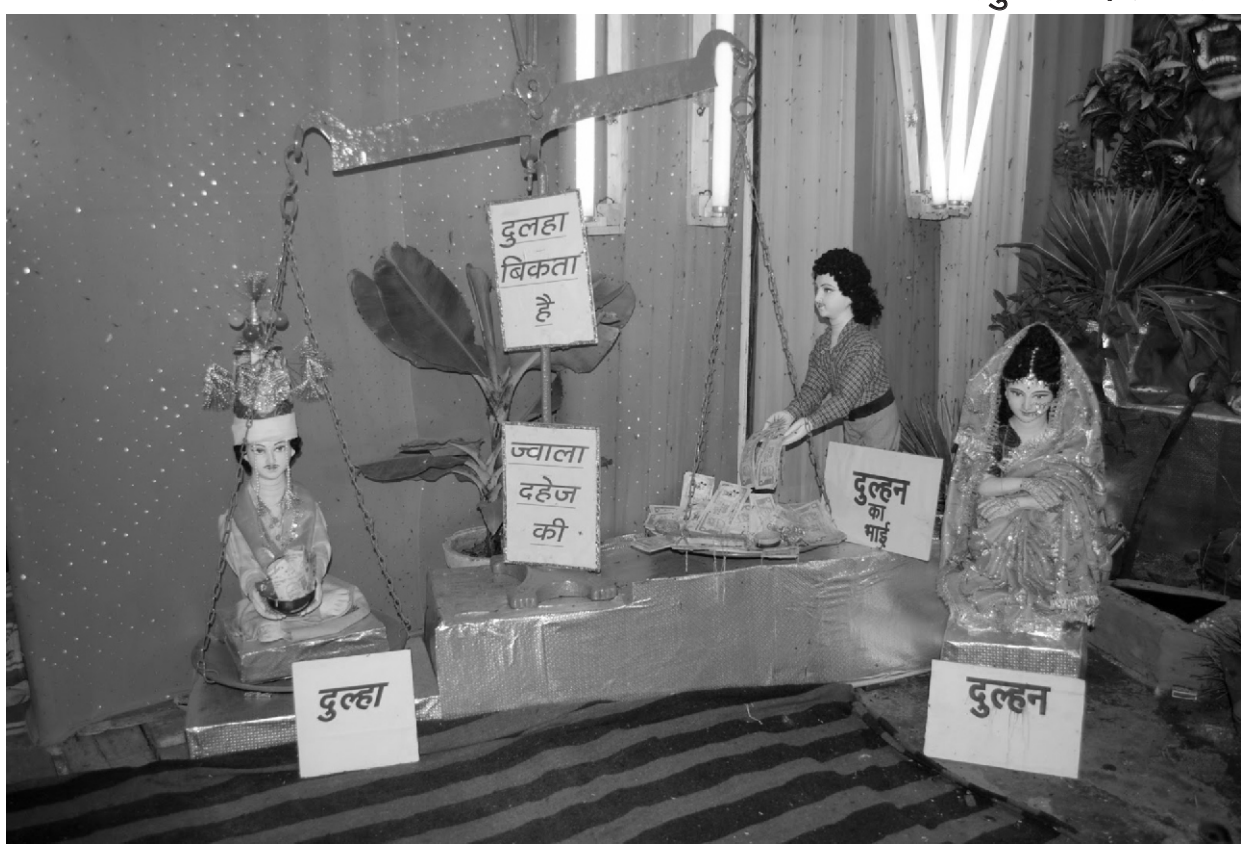

दहेज रहित अन्तर्जातीय जिम्मेदार प्रेम विवाहों को प्रयत्नपूर्वक बढ़ावा दिया जाना चाहिए

– स्वामी अग्निवेश

अपने वार्षिकोत्सव तथा सम्मेलनों में आर्य समाज को जाति तोड़ो–समाज जोड़ो–दहेज छोड़ो सम्मेलन करने चाहिए। अपने क्षेत्र के 50 अथवा 100 ऐसे जोड़ों का विधिवत चयन किया जाये जिन्होंने जिम्मेदार प्रेम का परिचय देते हुए 5 अथवा 10 वर्ष या अधिक पहले ऐसा विवाह किया हो। ऐसे जोड़ों को सपरिवार आमंत्रित कर उन्हें कुछ पारितोषिक अभिनन्दन पत्र देकर सार्वजनिक सम्मान का आयोजन करना चाहिए।

ऐसे मौके पर गणमान्य नागरिकों को भी आमंत्रित कर दहेज प्रथा आदि के विरूद्ध भजन नाटक आदि होने चाहिए। प्रस्ताव पारित कर दहेज रहित अन्तर्जातीय विवाहित जोड़ों के लिए सरकारी तथा निजी कम्पनियों की सेवाओं में 10 प्रतिशत आरक्षण की माँग करनी चाहिए।

यदि जातिवाद की खुराफात को तोड़कर आर्य–आर्य दहेज रहित शादियाँ गुण, कर्म, स्वभाव आधारित होने लगें तो एक प्रचण्ड आर्य बिरादरी बन सकती है और सामाजिक क्रांति का सूत्रपात हो सकता है।

महर्षि पतंजलि द्वारा रचित योगदर्शनम्

भाष्यकार : आचार्य राजपाल सिंह शास्त्री

योग के प्रकृत स्वरूप को जानने और योगविद्या के सूक्ष्मतत्त्वों को समझने के लिए योगदर्शन का आद्योपान्त अनुशीलन आवश्यक है और इसके लिए योगसूत्रों का ऐसा भाष्य अपेक्षित है जो विवेचनात्मक होने के साथ–साथ योग के रहस्यों को सुन्दर, सरल भाषा में उपस्थित कर सकें। आचार्य पं. राजपाल सिंह शास्त्री योगदर्शन का विद्योदय भाष्य आचार्य जी के दीर्घकालीन चिन्तन–मनन का परिणाम है। इस भाष्य के माध्यम से उन्होंने योगसूत्रों के सैद्धान्तिक एवं प्रयोगात्मक पक्ष को विद्वज्जनों तथा अन्य जिज्ञासुओं तक पहुँचाने का सफल प्रयास किया है।

इस भाष्य के अध्ययन से अनेक सूत्रों के गूढार्थ को जानकर योग जैसे क्लिष्ट विषय को आसानी से समझा जा सकता है। योग मार्ग पर चलने वाले मुमुक्षुजनों के सन्मुख विद्योदय भाष्य की यह द्वितीय आवृत्ति प्रस्तुत है। जनता ने इसको सराहा और अपनाया है। निश्चय ही सु–जन इससे लाभान्वित होंगे। यह पुस्तक शायद 'योगदर्शनम्' को समझने में कुछ मदद करें।

मधुर प्रकाशन, 2804, गली आर्य समाज,
बाजार सीताराम, दिल्ली–6,
दूरभाष :–011–23238631, मो.:–0–9810431857

भावनात्मक अत्याचार की शिकार महिलाएँ

— शालिनी बाजपेयी

महिलाओं के ऊपर आए दिन अत्याचारों की खबरें आती रहती हैं। जब बात शोषण की आती हैं, तब शारीरिक शोषण से कहीं ज्यादा भयानक होता है भावनात्मक शोषण। शारीरिक अत्याचार से तो वे किसी न किसी तरह से जूझ लेती हैं, लेकिन जब बात भावनात्मक अत्याचार की आती है तब वे बिल्कुल टूट जाती हैं और टूटकर अपने आपको गहरे अंधेरे में खो देती हैं। जब यह स्थिति आ जाती है, तब उसमें असुरक्षा की भावना घर कर जाती है।

अगर स्त्री के शरीर को चोट उसके पुरुष साथी के द्वारा नहीं पहुँचाई जा रही है, फिर भी वह दुखी है तो इसका सबसे बड़ा कारण भावनात्मक अत्याचार है। कब ये दांपत्य जीवन में सेंध लगाकर इसको भीतर ही भीतर खोखला बनादें, पता नहीं चलता। आज के युग में ये तेजी से बढ़ रहा है। इस दोहरे घातक व्यवहार से बचने के लिए इसको पहचानना जरूरी है। डॉ. सुनीता के अनुसार लिव इन रिलेशनशिप में रहने वाली अधिकांशतः महिलाएँ इसका शिकार हो जाती हैं। इस अत्याचार में वह महिला के शरीर पर नहीं, मन पर चोट पहुंचाता है। ताना कसना, महिला के व्यक्तित्व को लेकर मजाक उड़ाना, नजर अंदाज करना इसी भावनात्मक अत्याचार के लक्षण हैं। धीरे–धीरे स्त्री टूटकर बिखरने लगती है।

ऐसा नहीं है कि यह सिर्फ लिव इन रिलेशनशिप में ही हो, दांपत्य जीवन में भी ऐसा होता है। पति द्वारा पत्नी के किए गये निर्णयों को, पैसों को खर्च करने से सम्बन्धित बातें, बच्चों के देखभाल की जिम्मेदारियों को लेकर दुर्व्यवहार करने वाला व्यक्ति बातों से अपमानित कर पत्नी को छोटा महसूस कराता है। धीरे से स्त्री भनक, उदासी और डिप्रेशन का शिकार बन जाती है। किसी भी बीमारी से निपटने के लिए उसको पहचानना जरूरी है। आज के दौर में स्त्री इस संकट से गुजरती तो है, पर स्वीकारती नहीं है। रिश्ते में डर–डर कर जीना और उससे बाहर निकलने की कोशिश न करना ही गलत है।

रीना गुप्ता एक ऐसे ही भावनात्क अत्याचार का शिकार बनी, जहाँ उसके पति को उसका किसी दूसरे पुरुष से हंसना बोलना पसंद नहीं था। हद तो तब हो जाती, जब उसका पति अचानक ही उसको नजरअंदाज करने लगता है और उसके स्पर्श से भी दूर हटता है। ऐसी बातें रीना को तकलीफ पहुंचाती थी। पत्नी अपने वैवाहिक जीवन को बचाने के लिए कांटो के रास्ते अपना जीवन पार कर देती है।

आज जरूरत इस बात की है कि घुट–घुट कर जीवन की अपेक्षा काउंसलिंग करा मनोवैज्ञानिक की सलाह लें। भावनात्मक अत्याचार को सहन करना दुर्व्यवहार करने वाले को बढ़ावा देना है, जिसका परिणाम खतरनाक भी हो सकता है। घरेलू हिंसा से महिलाओं का संरक्षण अधिनियम–2005 के अनुसार भी व्यक्ति अगर किसी महिला के शरीर के अतिरिक्त मानसिक, मौखिक और भावनात्मक दुरुपयोग करता है तो उसके विरूद्ध कार्यवाही हो सकती है।

महिला अपने ऊपर होने वाले हालात से भावनात्मक और मानसिक रूप से तबाह हो जाती है। अच्छा तो ये होगा कि आत्म सम्मान से सही तरीकों से परिस्थितियों से निपटा जाए।

— बुमैन आन टाप से साभार

सर्वधर्म संसद और इण्डिया लॉग फाउण्डेशन के तत्वावधान में

सर्वधर्म सम्भाव इफ़्तार का भव्य आयोजन

नई दिल्ली : सर्वधर्म संसद और इण्डिया लॉग फाउण्डेशन के तत्वावधान में 30 जुलाई, 2013 को सर्वधर्म संसद के संयोजक स्वामी अग्निवेश जी के निवास पर सर्वधर्म सम्भाव इफ़्तार का भव्य आयोजन विभिन्न धर्मों के धर्म गुरुओं तथा अनेकों गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति में सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर जमीयत उलमा ए हिन्द के सचिव मौलाना अब्दुल हमीद नौमानी, इण्डिया लॉग फाउण्डेशन के अध्यक्ष मौ. शवान वरिष्ठ पत्रकार श्री वेद प्रताप वैदिक, सेण्ट स्टीफन कॉलेज के प्रिंसपल श्री वाल्सन थम्पू, जामिया मिलिया विश्वविद्यालय के प्रोफेसर श्री अख्तरूल वासे, अग्नि फॉउण्डेशन के प्रधान आदित्य घिलडियाल, अफगानिस्तान के मेम्बर ऑफ पार्लियामेन्ट गुलबादशाह मजीदी, सुप्रसिद्ध लेखक एवं विचारक एन. के. शर्मा जी सहित विभिन्न धर्मों के धर्माचार्य उपस्थित थे। इनके अतिरिक्त आर्य युवा नेता श्री मनु सिंह एवं जवाहर लाल नहेरू एवं जामिया विश्वविद्यालय के छात्र तथा छात्रायें एवं दिल्ली विश्वविद्यालय

के प्रोफेसर विकास वानीवाल तथा अंशु चौधरी और साथ–साथ बंधुआ मुक्ति मोर्चा से जियाउद्दीन जावेद भी शामिल हुए।

इस अवसर पर मौलाना अब्दुल हमीद नौमानी ने इस्लाम धर्म में रोजा के महत्त्व को बताते हुए कहा कि इस्लाम में रोजे का महत्त्व इसलिए अत्यधिक है कि इस विशेष अवसर पर इन्सान के आन्तरिक गुणों को निखारने का कार्य भारी पैमाने में किया जाता है। इसका मुख्य उद्देश्य यह है कि इन्सान बुराइयों से दूर हों और इनके हृदय पवित्र हों। इन्सानों में आत्म–संयम पैदा हो तथा शरीर को रोगमुक्त करने के उद्देश्य से परहेज करने का जज्बा पैदा हो तथा हम सब खुदा के श्रेष्ठ बन्दे बनने की दिशा में कदम बढ़ायें। उन्होंने कहा कि रोजा रखने से इन्सान के दिलों में खुदा का डर पैदा होता है और मन को वश में करने की शक्ति प्राप्त होती है।

इस अवसर पर जामिया मिलिया विश्वविद्यालय के प्रोफेसर श्री अखतरूल वशी ने रमजान के महीने के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि रमजान अरबी चन्द्र आधारित कैलेण्डर का नौंवा महीना है। यह महीना दुनिया भर के मुसलमानों के लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि इस्लाम में पाँच चीजें मुख्य हैं – ईमान, सलात, सौम, जमात तथा हज़।

उन्होंने कहा कि रोजे का मकसद अल्लाह के प्रति समर्पण तथा अल्लाह का भय इन्सान में पैदा करना है। जब पूरे विश्व के लोग एक साथ रोजा रखते हैं तो सारा वातावरण भलाई से भर जाता है तथा निराश्रित एवं गरीबों को इफ़्तार कराने का विशेष महत्त्व बताया गया है। उन्होंने कहा कि इस विशेष अवसर पर हम सब संकल्प लें कि निरीह लोगों का ध्यान रखेंगे तथा अपने कार्यों से किसी का दिल नहीं दुखायेंगे।

इस अवसर पर सेन्ट स्टीफन्स के प्रिंसिपल श्री वॉलसन थम्पू जी ने कहा कि धर्म की सबसे बड़ी चुनौती इस समय बाजारवाद की संस्कृति है और रोजे एवं उपवासों के द्वारा हमें इस संस्कृति से लोहा लेने के लिए अपने आपको प्रबल बनाना चाहिए। श्री एन. के. शर्मा जी ने रोज़े के साथ–साथ उपवासों एवं व्रतों की आवश्यकता पर प्रकाश डाला।

अंत में में स्वामी अग्निवेश जी ने छात्रों से वार्तालाप करते हुए अपना पक्ष रखा। उन्होंने कहा कि – "We must not be God fearing individuals but God Loving individuals." अपनी बात को आगे रखते हुए स्वामी जी ने कहा कि सभी तथाकथित धर्मों के लिए यह आवश्यक है कि संसार की तीन चौथाई आबादी गरीब, भूखी, नंगी एवं दाने–दाने की मोहताज रहे तभी सब धर्म अपनी ज़कात एवं दानप्रियता का प्रदर्शन कर पायेंगे। स्वामी जी ने कहा कि रोज़े या उपवास का असल मतलब तभी होगा जब हम इन सबके द्वारा अपनी आन्तरिक शक्ति को जगा उसे व्यवस्था परिवर्तन में लगायें अन्यथा यह सब मात्र पाखण्ड हैं।

The Great Debate between Vegetarians and Dead body eaters (Non vegetarians) Part-I

- Manu Singh

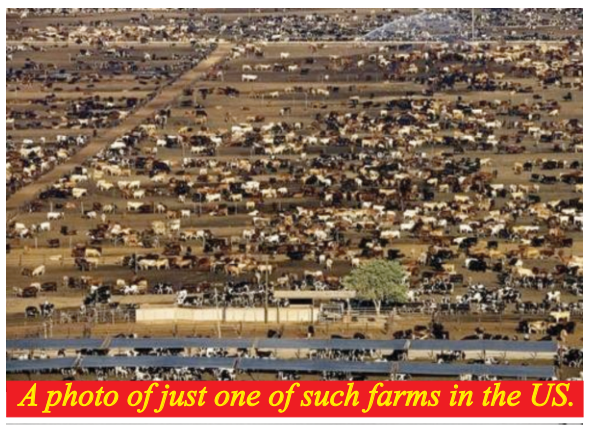

A photo of just one of such farms in the US.

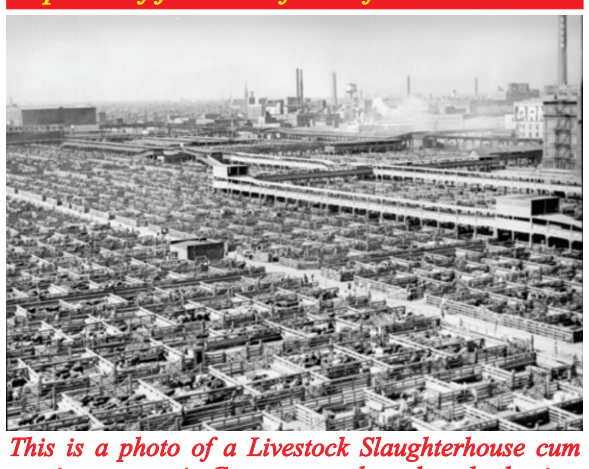

This is a photo of a Livestock Slaughterhouse cum rearing pasture in Germany- and we thought the time of the gas chambers had gone....

	U.S. Beef Consumption (millions of tons)	CO_2-Equivalent Greenhouse Gases from U.S. Beef Production (millions of tons)	World Beef Consumption (millions of tons)	CO_2-Equivalent Greenhouse Gases from World Beef Production (millions of tons)
2009 (projected)	14	210	72	1,100
2020 (projected)	15	230	80	1,200
2030 (projected)	17	250	87	1,300
Cumulative (2009–2030)	340	5,000	1,800	26,000

Quantities are rounded to two significant digits

Farm cows never die of hunger

Recently Swami Agnivesh had shared a gruesome video of Buffalo Slaughter in the vicinity of Delhi.

http://www.youtube.com/watch?v=xaOs1JuvuM0. The blood curdling and most despicable murder of the most voiceless animals in the most cold and monstrous way made any sane heart to skip a few beats and ponder over as to how the so called compassionate human beings are capable of such diabolic killing just for the satiation of their taste buds. However there were a few who did disagree and only one of them had the sanity to provide some sort of scientific skeleton to his points which were followed by a churning of ideas and logical assertions.....

Adil Zamir Khan

Don't call it violence, please do not spread hatred among the peoples . your act is against the secular structure of the country. What u such peoples like or not , no one is here bothering it , please keep likening it up to your self. no one is compelling any one to be non- vegetarian than why you forcing to all to be vegetarians???

Actually eating animal/bird/fish or sea food is a natural process and an act to balance the ecology of the earth. Being an environmental student , and as mentioned by shri Agnivesh jee, it may be true that over 100 crore animals and bird are being slaughtered every day , suppose, if stop eating, what will happen , they will required 100x100=10000 crore kg of biomass(grains /grass or green leavs) on minimum basis apart from million of million liter of fresh water per day. then will it not increase scarcity of food ..not only for them but for so called vegetarians ... the earth will be converted in barren desert....., beside these , the tanning factories, the pearl and button making factories and brush making industries , export and import and foreign exchange and so on will die automatically ... for all, will shri Agnivesh and his chellas will take moral responsibility and will they provide alternate facilities or livelihood to the effected peoples and industries????.

"Sooch Badlo Agey Niklo " & "Do good Feel good"

Manu Singh

Adil Zamir Khanjee- I am happy to see a reaction that does smell of rationality and logic but my dear friend you are just trying as you are not even near to the reality. When one thinks of logic he or she should be science centric and not religion centric.....you here do try to put on a robe of rationality but the act in itself is futile....why....well lets see what the facts say. There is a report prepared by the UN its called Long shadow of the Livestock industry- which has been thoroughly prepared by scientists under the direct supervision of Nobel award winners Al Gore and R K Pachauri.

All the animals that you eat only to satisfy your own taste buds are not naturally occurring... they are prepared specifically to satisfy mans evil desire to consume meat. For this the world has to cater a humongous 18762 times of meat animals that would have actually existed, and the gruesome effect of this extremely oversized population is highlighted below one by one

AANKHEIN KHOLO SOCH APNE AAP BADAL JAYEGI.

1. Livestock produce 40% more green house gases than all global transportation combined.
2. Amazon Forest releases 20 billion tonnes of fresh water into the atmosphere everyday. 24 hours of deforestation produces as much CO2 as 8 million people flying from London to New York. Yet every second rainforests the size of a football field is cleared to make 257 Hamburgers. Since 1970 more than 90% of the worlds rain forests have been cleared only to produce livestock pastures.
3. 16 Pounds of grain is required to produce 1 pound of lamb and 22 pounds to produce 1 pound of beef.
4. Factory farm cows are always over fed they never die of hunger but every 2.3 seconds a child dies of hunger that's 40000 daily and 7000 in India(who is responsible for these diabolic murderes?).
5. 1.2 Billion people suffer from starvation and another 1.2 billion are obese.
6. Every year 760 million tonnes of grain is fed to the livestock which can can solve the global food shortage 14 times.
7. Grain fed to animals loses 90% of its original energy.
8. 1 Hectare land produces potatoes for 22 people,rice for 19, lamb for 2 and beef for 1.
9. 1.1 Billion people live without safe and clean drinking water that's 1 in 6 of us yet 19737 litres of water is wasted to produce just 1 pound of beef- thats like talking a 7 minute shower for an entire year.
10. Just in the US itself the farm animals produce 86000 tons of excreta- thats 130 times more than the entire human population.

7000 die in India alone due to hunger related causes

The picture depicts the acute water shortage in the Indian Capital.

वैश्वीकरण बनाम आदिवासी

— हरिराम मीणा

भारत में वैश्वीकरण की नीतियों को लेकर करीब ढाई दशक से जोर–शोर से यह प्रचार किया जा रहा है कि सब मर्जों की यही एकमात्र दवा है। अब यह बात स्पष्ट होती जा रही है कि वैश्वीकरण के सारे फायदे राष्ट्र–समाज के भद्र वर्ग को ही मिलते आए हैं। प्रमुख शक्तियां और साधन–संसाधन इन्हीं के अधिकार में रहे हैं। जैसे, राज, धन, ज्ञान, धर्म की शक्तियाँ पूंजी, बाजार, तकनीकी, उच्च शिक्षा और अन्य सुविधाएं। इस दृष्टि से भारत के आम आदमी के समाज का विश्लेषण किया जाए तो गरीबी, भुखमरी, बेरोजगारी, अच्छी शिक्षा का अभाव, स्वास्थ्य की समस्याएं, पेयजल आपूर्ति का संकट और अन्य आधारभूत सुविधाओं का अभाव दिखाई देता है।

भूमंडलीकरण का यह वह दौर चल रहा है जब सारे प्राकृतिक संसाधनों का फटाफट और अंधाधुंध दोहन कर लिया जाए, हो सकता है फिर ऐसा सुनहरा अवसर इन कंपनियों को मिले या न मिले। नई आर्थिक नीति की चरम परिणति जन–विरोधी वैश्वीकरण के रूप में अब सामने आ रही है। बहुराष्ट्रीय निगमों, उनको मॉडल मानने वाले देशी पूंजीपतियों और प्राकृतिक संसाधनों की बंदरबांट में लगे राजनीतिकों, प्रशासकों और बिचौलियों को यह रास आता है कि जो लोग प्राकृतिक संसाधनों के दोहन के खिलाफ आवाज उठाते हैं उन्हें ठिकाने लगाया जाए और अपना रास्ता साफ किया जाए। आदिवासी हजारों सालों से देश की प्राकृतिक संपदा के रखवाले (ध्यान रहे कि आदिवासी प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षक रहे हैं, उन्होंने कभी उनके मालिक होने का दावा नहीं किया) रहते आए हैं और अब बचे–खुचे प्राकृतिक संसाधनों पर पूंजीनायकों की गिद्ध दृष्टि को देखते हुए सवाल उठता है कि प्राकृतिक संपदा और आदिवासी समाज कहां तक सुरक्षित हैं?

उपनिवेश–काल में एक ईस्ट इंडिया कंपनी ने किस कदर भारत को लूटा था यह समझदार लोगों की स्मृति से ओझल नहीं हुआ है और अब सैकड़ों बहुराष्ट्रीय कंपनियों की घुसपैठ हो चुकी है जिनका दुहरा मकसद है– एक, भारत के प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध दोहन और दूसरा, भारत को उनका बाजार बना देना।

भारत के आदिवासी जन भौगोलिक दृष्टि से मुख्य समाज से अलग–थलग रहते आए हैं। वे पूंजी संचालित बाजार का हिस्सा धीरे–धीरे बनेंगे, लेकिन जहां तक प्राकृतिक संसाधनों की बात की जाती है तो आदिवासी अस्तित्व का सवाल गहरे रूप में जल, जंगल और जमीन से जुड़ा हुआ मिलता है, जिसे दूसरे शब्दों में हम प्रकृति पर निर्भर जीवन कह सकते हैं। आदिवासी जंगल में रहते आए हैं। जंगल प्रकृति का आधारभूत तत्त्व है। अगर जंगल है तो पहाड़ हैं, नदियाँ हैं, झीलें हैं, सरोवर हैं, वनस्पतियां हैं, जंगली जानवर हैं और धरती के गर्भ में संचयित खनिज संपदा है। इसलिए जब–जब जंगल पर आंच आई तब–तब आदिवासी जन ने अपना मोर्चा संभाला।

इतिहास उठा कर देखें तो पता चलता है कि आर्य–अनार्य संग्राम–श्रृंखला के बाद सीधा ब्रिटिश काल आता है जब जंगलों में बाहरी घुसपैठ हुई। इसका प्रतिरोध विद्रोह और संघर्षों के माध्यम से आदिवासियों ने किया और यह प्रतिरोध भारत के प्रत्येक अंचल में हुआ। मुझे नहीं लगता कि कोई अंचल अछूता रहा हो। ठेठ पूर्वोत्तर की नागारानी गाईदिल्ल्यू से सिद्धू–कानू, बिरसा मुंडा, तिलका मांझी, टंट्या मामा, गोविंद गुरु, जोरिया भक्त, ख्याजा नायक, अल्लूरि सीताराम राजू और केरल की आदिवासी किसान क्रांति। इसी क्रम में उच्च हिमालय के लेप्चा–भूटिया से अंडमान की अबेर्दीन की लड़ाई को शामिल किया जाए। बहुराष्ट्रीय कंपनियों, सत्ता और दलालों की गठबंधनी घुसपैठ के खिलाफ आज अकेला आदिवासी खड़ा है और स्वयं के लिए नहीं बल्कि देश की प्राकृतिक संपदा और राष्ट्र के लिए।

भारत में वैश्वीकरण की नीतियों को लेकर करीब ढाई दशक से जोर–शोर से यह प्रचार किया जा रहा है कि सब मर्जों की यही एकमात्र दवा है। अब यह बात स्पष्ट होती जा रही है कि वैश्वीकरण के सारे फायदे राष्ट्र–समाज के भद्र वर्ग को ही मिलते आए हैं। प्रमुख शक्तियां और साधन–संसाधन इन्हीं के अधिकार में रहे हैं। जैसे, राज, धन, ज्ञान, धर्म की शक्तियाँ पूंजी, बाजार, तकनीकी, उच्च शिक्षा और अन्य सुविधाएं। इस दृष्टि से भारत के आम आदमी के समाज का विश्लेषण किया जाए तो गरीबी, भुखमरी, बेरोजगारी, अच्छी शिक्षा का अभाव, स्वास्थ्य की समस्याएं, पेयजल आपूर्ति का संकट और अन्य आधारभूत सुविधाओं का अभाव दिखाई देता है।

इस संदर्भ में आदिवासी समाज की दशा में सुधार नहीं के बराबर हुआ है। इससे उलट आदिवासी अंचलों में प्राकृतिक संसाधनों की जो लूट वैश्वीकरण के इस दौर में मची है उसने आदिवासी जीवन को नरकतुल्य बना दिया है जहां आधारभूत सुविधाओं, मानवाधिकारों, लोकतंत्र में साझेदारी आदि की बात तो बहुत दूर, आदिवासी समाज का अस्तित्व ही गहरे संकट में फंसता जा रहा है। 29 मई को मेधा पाटकर ने भोपाल में एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में जोर देकर कहा कि अगर आदिवासी अंचलों में सरकार विकास योजनाओं को लेकर अब भी नहीं पहुंची तो नक्सलवाद को बढ़ावा मिलेगा। इसी सप्ताह छत्तीसगढ़ में कांग्रेस की परिवर्तन यात्रा पर जबर्दस्त नक्सली हमला हुआ जिसमें छत्तीसगढ़ के पूर्व गृहमंत्री महेंद्र कर्मा सहित कई नेता हताहत हुए।

नक्सलवाद के उभार को भी वैश्वीकरण के संदर्भ में देखा जा सकता है। प्रसिद्ध पत्रकार और आदिवासी विषयों के अध्येता रामशरण जोशी ने 'राजस्थान पत्रिका' (28 मई) में छपे अपने लेख में हिंसा को नकारते हुए बस्तर की समस्या को व्यापक दृष्टि से देखने का आग्रह किया है। उन्होंने ये संकेत दिए कि सरकारें चाहे कांग्रेस की हों या भाजपा की, उनके प्रति आदिवासी समाज में अविश्वास घर कर चुका है, उसे दूर करने की आवश्यकता है। आदिवासियों की जमीनों पर कब्जा, विकास के नाम पर उनका विस्थापन और विकास संबंधी सरकारी कदमों को अविश्वास की दृष्टि से देखना वह समस्या है, जो विशेष रूप से आदिवासी समाज से ताल्लुक रखती है। पिछले जयपुर लिटरेचर फेस्टीवल में अगर महाश्वेता देवी यह कहती हैं कि 'नक्सलियों के भी अपने सपने हैं' तो वे प्रकारांतर से बहुत कुछ कह देती हैं जिसे समझने की जरूरत है। कोई भी हिंसा समाज क्या, सृष्टि की किसी भी योजना के विरुद्ध अपराध है। सवाल उठता है कि हिंसा का समाधान प्रतिहिंसा है या विकास का सही विकल्प?

उपनिवेश–काल से पूर्व आदिवासी समाज भारतीय मुख्य समाज से अलग–थलग रहा। आदिवासी अंचलों में विकास और औपनिवेशिक विस्तार की दृष्टि से हस्तक्षेप हुआ, लेकिन आदिवासी प्रतिरोध को देखते हुए अंग्रेजों ने आदिवासी समाज को अलग–थलग रख कर ही हस्तक्षेप करने की नीति को प्राथमिकता दी, साथ ही उनका नजरिया हिकारत से भरा हुआ था। संपूर्ण आदिवासी समाज को जंगली बर्बर लोगों के समुदाय के रूप में चित्रित किए जाने का कुचक्र रचा गया।

प्रसिद्ध फ्रेंच लेखक हर्वे कैंफ ने अपनी पुस्तक 'हाउ द रिच आर डेस्ट्रॉइंग द प्लेनेट' की प्रस्तावना में लिखा है– 'इस दुनिया में पाए जाने वाले संसाधनों के उपभोग में हम तब तक कमी नहीं ला सकते, जब तक हम शक्तिशाली कहे जाने वाले लोगों को कुछ कदम नीचे आने के लिए मजबूर नहीं करते और जब तक हम यहां फैली हुई असमानता का मुकाबला नहीं करते। इसलिए ऐसे समय में जब हमें सचेत होने की जरूरत है, हमें 'थिंक ग्लोबली ऐंड एक्ट लोकली' के उपयोगी पर्यावरणीय सिद्धांत में यह जोड़ने की जरूरत है कि 'कंज्यूम लेस ऐंड शेयर बेटर।'

कुछ महीने पहले दिवंगत हुए वेनेजुएला के राष्ट्रपति ह्यूगो चावेज ने 20 सितंबर 2006 को काराकास में संयुक्त राष्ट्र के सम्मेलन में भाषण देते हुए विश्व जन–गण के साम्राज्यवाद विरोधी संघर्ष का संदर्भ देते हुए कहा था कि– 'मैं याद दिलाना चाहता हूं कि इस दुनिया की जनसंख्या के सात प्रतिशत (अमीर) लोग पचास प्रतिशत उत्सर्जन के लिए जिम्मेदार हैं। जबकि इसके विपरीत पचास प्रतिशत गरीब लोग, मात्र और मात्र सात प्रतिशत उत्सर्जन के लिए जवाबदेह हैं।... इस दुनिया के पांच सौ सबसे अमीर लोगों की आय सबसे गरीब इकतालीस करोड़ साठ लाख लोगों से ज्यादा है। दुनिया की आबादी का चालीस प्रतिशत गरीब भाग यानी 2.8 अरब लोग दो डॉलर प्रतिदिन से कम में अपनी जिंदगी गुजर–बसर कर रहे हैं और यह चालीस प्रतिशत हिस्सा दुनिया की आय का पांच प्रतिशत ही कमा रहा है।

हर साल बानबे लाख बच्चे पांच साल की उम्र में पहुंचने से पहले ही मर जाते हैं और इनमें से 99.9 प्रतिशत मौतें गरीब देशों में होती हैं।... नवजात बच्चों की मृत्यु दर प्रति एक हजार में सैंतालीस है, जबकि अमीर देशों में यह दर प्रति हजार में पांच है। मनुष्यों की जीवन प्रत्याशा सड़सठ वर्ष है, कुछ अमीर देशों में यह प्रत्याशा उन्यासी वर्ष है, जबकि कुछ गरीब देशों में यह मात्र चालीस वर्ष है। इन सबके साथ ही 1.1 अरब लोगों को पीने का साफ पानी मयस्सर नहीं है। 2.6 अरब लोगों के पास स्वास्थ्य और स्वच्छता की सुविधाएं नहीं हैं। अस्सी करोड़ से अधिक लोग निरक्षर हैं और एक अरब दो करोड़ लोग भूखे हैं। यह है हमारी दुनिया की तस्वीर।'

इन्हीं हालात को देखते हुए क्यूबा के दिवंगत राष्ट्रपति फिदल कास्त्रो ने जोर देकर कहा था 'एक प्रजाति खात्मे के कगार पर है और वह है मानवता।' रोजा लग्जमबर्ग का कहना है कि अगर पृथ्वी को बचाए रखना है तो बर्बर पूंजीवाद का एक ही विकल्प है वह है समाजवाद।

सोवियत संघ के विघटन के बाद अमेरिका की अगुआई में एक मुहिम के तहत अग्रसर पूंजीवाद साम्राज्यवाद को करीब पचीस वर्ष होने जा रहे हैं। इसी चौथाई शताब्दी में अमेरिका ने जो बेलगाम दादागीरी की है उसके ज्वलंत उदाहरण इराक, अफगानिस्तान, मिस्र, लीबिया, सीरिया और लातिन अमेरिका के राष्ट्रों की संप्रभुता में सेंध आदि हैं, लेकिन यह सब कुछ होते हुए भी पश्चिमी राष्ट्रों के साम्यवादी–समाजवादी दलों की सदस्यता में वृद्धि, 2012 के चुनाव में यूनान में तेजी से उभरी रेडिकल वामपंथी पार्टी सिरिजा, अरब देशों में अमेरिका के विरुद्ध शत्रुगत भावना का फैलाव, दक्षिणी अमेरिकी देशों में अमेरिका विरोधी माहौल और अमेरिकी धमकी के खिलाफ उत्तरी कोरिया की चुनौती आदि को देखते हुए दुनिया के हर क्षेत्र में इस नवसाम्राज्यवाद के क्रूर यथार्थ का पर्दाफाश करने और बेहतर विकल्प ढूंढ़ने के प्रयास जारी हैं।

वैश्वीकरण बनाम प्रकृति और आदिवासी की अवधारणा को समझने के लिए जाने–माने ग्लोबल इन्वेस्टर जेरेमी ग्रेंथम कहते हैं कि 'सभी संसाधनों के अंधाधुंध उपयोग से हमारी ग्लोबल अर्थव्यवस्था ऐसे कई संकेत दर्शा रही है जिनके कारण हमसे पहले कई सभ्यताएं धराशायी हो चुकी हैं।' माइक्रोसॉफ्ट धनपति बिल गेट्स ने पिछले दिनों प्रायश्चित करते हुए कहा है कि 'पूंजी को अब मानवीय चेहरे के साथ आना चाहिए।' स्पष्ट है कि पूंजी की वैश्विक भूमिका मनुष्य–विरोधी रही है।

आज सवाल आदिवासी का होने के साथ–साथ राष्ट्र का है और राष्ट्र के आगे प्रकृति और अंततः पृथ्वी का। इसलिए सवाल हम सब का है। जो तटस्थ हैं या रहेंगे वे भी बच नहीं सकते।

–जनसत्ता से साभार

मनुष्य कौन?

मनुष्य उसी को कहना कि मननशील होकर स्वात्मवत् अन्यों के सुख–दुःख और हानि–लाभ को समझें। अन्यायकारी बलवान से भी न डरे और धर्मात्मा निर्बल से भी डरता रहे। इतना ही नहीं, किन्तु अपने सर्व सामर्थ्य से धर्मात्माओं, कि चाहे वे महा अनाथ, निर्बल और गुण रहित क्यों न हों, उनकी रक्षा, उन्नति, प्रियाचरण और अधर्मी चाहे चक्रवर्ती, सनाथ, महाबलवान् और गुणवान भी हो, तथापि उसका नाश, अवनति और अप्रियाचरण सदा किया करे। अर्थात् जहाँ तक हो सके वहाँ तक अन्यायकारियों के बल की हानि और न्यायकारियों के बल की उन्नति किया करे। इस काम में चाहे उसे कितना ही दारुण दुःख प्राप्त हो, चाहे प्राण भी भले ही जावें, परन्तु इस मनुष्य रूप धर्म से पृथक कभी न होवे। – महर्षि दयानन्द सरस्वती

सार्वदेशिक सभा की संचालन समिति के संयोजक स्वामी आर्यविज्ञ जी के सानिध्य में 11 अगस्त को पूर्वान्ह 11 बजे

राजस्थान की आर्य समाजों के क्रान्तिकारी कार्यकर्ताओं का प्रान्तीय सम्मेलन

11 अगस्त को राजस्थान में पूर्ण शराबबंदी के लिए प्रान्तीय आन्दोलन की होगी घोषणा

जयपुर 25 जुलाई। आज भारतवर्ष के आकाश पर विनाश के बादल मंडरा रहे हैं। जनता मंहगाई से त्रस्त है, बलात्कार और अपहरण से पीड़ित मातृ शक्ति के गगन बधिर विलाप को कोई सुनने वाला नहीं है। जिस भारत ने विश्व को यह सन्देश दिया कि ''नार्यस्तु यत्र पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता'' वहीं भारत आज महिलाओं के लिए विश्व का सर्वाधिक असुरक्षित राष्ट्र है। आज की भ्रष्ट राजनीति की चक्की में जनता पिस रही है। सत्ता पर लुटेरों का कब्जा हो गया है। सिद्धान्तहीन राजनीति के वात्याचक्र से सारा देश जर्जर हो चुका है। देश की आजादी के लिए आर्य समाज ने अपने हजारों जवान बेटों की आहुति दी। शहीदे आज़म भगतसिंह, चन्द्रशेखर आजाद आदि क्रान्तिकारी जब सांडर्स का वध करके अपने कमरे में गये तो उनके पास खाने के लिए एक दाना भी नहीं था। किसी मित्र से 10 रुपये उधार लेकर सबने अपनी भूख मिटाई। ऐसे शहीदों के त्याग और बलिदान के कारण देश आजाद हुआ है और आजादी के 65 वर्ष बाद लुटेरे देश के कर्णधार बन गये। 2 जी स्पेक्ट्रम में ए. राजा पौने दो लाख करोड़ रुपये डकार गया। कॉमनवेल्थ गेम्स में कलमाड़ी का घोटाला, कोल आवंटन घोटाला, चारा घोटाला, दवाई घोटाला। आज विश्व में भारत ही एकमात्र ऐसा राष्ट्र है जिसे घोटालों का राष्ट्र कहते हैं। मुट्ठीभर लोग सारे देश को लूट रहे हैं और जनता किंकर्त्तव्य विमूढ़ है। युवतियों पर तेजाब फेंकी जा रही है। भारतवर्ष की नई पीढ़ी नशाखोर और चरित्रहीन हो गई है। अंग्रेजी का बोलबाला है। भारतवर्ष पर 10 प्रतिशत काले अंग्रेजों का कब्जा है। अंग्रेजी माध्यम के स्कूल वैदिक संस्कृति के स्लाटर हाऊस बन गये हैं। करोड़ों नवयुवक बेरोजगार है और हताश होकर वे अपराधी बन रहे हैं। किसान आत्महत्या कर रहे हैं। क्षितिज से वेग भरी अन्धकार की आंधी चल रही है। परिवार टूट रहे हैं, समाज टूट रहा है, राष्ट्र टूट रहा है। जातिवाद, क्षेत्रीयता, भाषावाद का अजगर देश को खण्ड–खण्ड कर रहा है।

आखिर इस विनाश का कारण क्या है?इसका एकमात्र कारण है आर्य समाज का मृतप्राय होना और भारतवर्ष का महर्षि दयानन्द के प्रभामंडल से दूर होते जाना। अंधविश्वास और पाखंड के प्रलय कालीन बादलों ने भारत को पुनः निबिड़ अंधकार में डुबो दिया है। जगन्नाथ मंदिर में 8 लाख भक्त नाचते हुए कृष्ण को मामा के घर पहुँचाने जा रहे हैं। धर्म एक तमाशा बनकर रह गया है। महर्षि ने संदेश दिया था कि सत्य के ग्रहण करने और असत्य के त्यागने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए परन्तु आज आर्य समाज के साधु सन्तों तक का यह नियम बन गया है – असत्य के ग्रहण करने और सत्य के त्यागने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए। इस स्थिति में विश्व आर्य समाज से क्या अपेक्षा कर सकता है। अतः आर्य समाज के निष्ठावान कार्यकर्ताओं का चिन्ता के सागर में डूबना स्वाभाविक है परन्तु निराशा से समस्याओं का समाधान नहीं होता। अब आर्य जगत् में फूट समाप्त करने की घिसी–पिटी बातों को छोड़ना होगा। निहित स्वार्थी तत्त्व फूट समाप्त नहीं होने देंगे। आर्य समाज को सशक्त बनाने का एकमात्र उपाय यही है कि जो वैदिक धर्म, आर्य समाज और महर्षि दयानन्द के प्रति निष्ठावान एवं समर्पित हैं वे एक मंच पर आ जाएं। ऐसे निष्ठावान लोगों की कोई कमी नहीं है। अतः हमने प्रतिनिधि सभाओं के झगड़ों से अलग होकर रचनात्मक कार्य करने का निर्णय लिया है। 11 अगस्त को जयपुर में आयोजित सम्मेलन में निम्नलिखित बिन्दुओं पर गहन चिन्तन होगा –

1. वेदों और आर्ष ग्रन्थों का प्रचार।
2. शिक्षण संस्थाओं के माध्यम से छात्र–छात्राओं का वैदिक धर्म पर आधारित व्यक्तित्व निर्माण। इस हेतु शिविर आयोजित करना और श्रव्य, दृश्य उपकरणों से ज्ञानवर्धन करना। नाटक एकांकी आदि साहित्यिक साधनों से धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक विकृतियों को समाप्त करना।
3. जनजागरण के लिए धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक, शैक्षणिक, साहित्य का प्रकाशन।
4. मांसाहार शराब और नशाखोरी के विरूद्ध प्रांतव्यापी अभियान। इस अभियान की घोषणा 11 अगस्त को की जायेगी जिसमें राजस्थान के अनेक राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक नेता इस अभियान के अभिन्न अंग बनेंगे।
5. गो–रक्षा और पशु रक्षा के लिए आन्दोलन, प्रदर्शन, रैलियाँ और धरने।
6. सर्वस्पर्शी नैतिक उत्थान का आन्दोलन।
7. जातिवाद, अस्पृश्यता, भ्रूण हत्या आदि विकृतियों के विरूद्ध जनजागरण अभियान।
8. प्रत्येक विधानसभा क्षेत्र में 10–20 हजार मतदाताओं का संगठन, जो शराबी और अपराधी प्रत्याशियों को पराजित करने के लिए कटिबद्ध होंगे।
9. राजस्थान के कम से कम 20 विधानसभा क्षेत्रों में आर्य समाजियों को प्रत्याशी बनाने का प्रयास करना।
10. प्रदूषण समाप्त करने के लिए सारे राजस्थान में यज्ञों का आयोजन करना।
11. वेदों और आर्य समाज के प्रचार के लिए विद्वानों और भजनोपदेशकों की व्यवस्था करना।

इस सम्मेलन में 4 से 13 जून को आर्य प्रतिनिधि सभा की बैठक में स्वीकृत प्रतिनिधि भाग लें और भावी कार्यक्रम की रूपरेखा तैयार करेंगे।

युवक चरित्र निर्माण एवं योग विज्ञान शिविर सम्पन्न

आज का युवक अपनी भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता को भूलकर विदेशी प्रचार–प्रसार के माध्यम से परोसी जा रही पाश्चात्य संस्कृति और सभ्यता के रंग में रंगता जा रहा है जिसमें अश्लील टी. वी. कार्यक्रमों, पुस्तकों, पत्र–पत्रिकाओं और चित्रों ने चरित्र भ्रष्ट कर दिया है। शराब, गुटखा, तम्बाकू, भांग आदि के सेवन ने मन मस्तिष्क को खोखला कर दिया है। इस भ्यानक स्थिति को देखते हुए वैदिक धर्म संस्कृति के द्वारा संस्कार, देशभक्ति, ईश भक्ति एवं मातृ–पितृ भक्ति की भावनायें भरना एवं दुर्व्यसनों से मुक्ति दिलाना, स्वस्थ एवं निरोग जीवन बनाने तथा आत्म रक्षा हेतु सक्षम बनाने के उद्देश्य से सत्य सनातन वैदिक धर्म न्यास (रजि.) के तत्वावधान में युवक चरित्र निर्माण एवं योग विज्ञान शिविर पं. विक्रम देव शास्त्री के सान्निध्य में 2 से 9 जून तक अग्रसैन इण्टर कॉलेज, रेलवे रोड में सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर रामेश्वर सरपंच, प्रधान आर्य उपप्रतिनिधि सभा, गौतमबुद्धनगर, सुरेन्द्र नागर, सांसद, महेन्द्र सिंह आर्य, राकेश आर्य एडवोकेट, डॉ. महेश शर्मा, विधायक, नोएडा, डॉ अजय चौहान प्रिंसिपल, योगाचार्य कृष्ण पाल शास्त्री (दिल्ली), योगाचार्य अजब सिंह शास्त्री, तेजपाल शास्त्री, अनिल शास्त्री, मुकेश शास्त्री, कमलदेव शास्त्री, वेदपाल आर्य (भजनोपदेशक), सहदेव आर्य (भजनोपदेशक), सावित्री आर्या (भजनोपदेशक) आदि सहित भारी संख्या में आर्यगणों ने भाग लिया।

– दादरी, गाजियाबाद

"वैदिक सार्वदेशिक" का स्वतन्त्रता दिवस परिशिष्ट

आपको यह जानकर अति प्रसन्नता होगी कि आर्य समाज की विश्व विख्यात साप्ताहिक पत्रिका 'वैदिक सार्वदेशिक' 15 अगस्त, 2013 को एक विशेष संस्करण स्वतंत्रता दिवस परिशिष्ट निकालने जा रही है। आपसे अनुरोध है कि आप इसमें देशवासियों के नाम स्वतंत्रता दिवस बधाई का संदेश विज्ञापन के रूप में प्रकाशित करवा सकते है।

भारत के अलावा यह पत्रिका मॉरीशस, दक्षिण अफ्रीका, केनिया, फिजी, न्यूजीलैण्ड, अमेरिका, इंग्लैण्ड, कैनेडा आदि देशों में भी पढ़ी जाती है। विज्ञापन से प्राप्त तमाम धन का उपयोग सिर्फ वेदों व वैदिक संस्कृति के प्रचार प्रसार पर किया जायेगा।

विज्ञापन दर – कालम साइज 3.5 X 3 इंच के साथ न्यूनतम विज्ञापन फोटो सहित मात्र 4000 रू. में दिया जा सकता है।

कृपया विज्ञापन देने के लिये निम्न फोन नं. व ईमेल पर सम्पर्क करे

दूरभाष : 011.23274771, 23260985, 23367943, 08800614595,

ईमेल: sarvadeshik@yahoo.co.in

बिस्मिल के जन्मोत्सव पर समारोह

आर्य समाज, नोएडा द्वारा आर्यवीर क्रान्तिकारी पं. रामप्रसाद बिस्मिल के जन्मदिवस 11 जून को सायं क्रान्तिकारी एवं राष्ट्रभक्ति भरे गीतों का कार्यक्रम 'बिस्मिल सभागार' में आयोजित किया गया। कार्यक्रम का आरम्भ आचार्य डॉ. जयेन्द्र आर्य द्वारा संध्या वन्दन एवं कै. अशोक गुलाटी द्वारा 'बिस्मिल' की प्रसिद्ध रचना 'वह शक्ति हमें दो दयानिधे कर्त्तव्य मार्ग पर डट जावें' का पाठ किया गया। भानुप्रकाश शास्त्री एवं योगेन्द्र शास्त्री व अन्यों द्वारा देशभक्तों को राष्ट्रभक्तिपूर्ण गीतों से याद किया गया। कार्यक्रम में आर्य समाज, नोएडा के संरक्षक एवं एमिटी समूह के निदेशक आनन्द चौहान ने सभी आगन्तुकों का आभार व धन्यवाद व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि संस्कारवान समाज का निर्माण करने के लिए इस तरह के आयोजन करना बेहद जरूरी है। हमें समाज को संगठित कर, देशभक्ति के एक सूत्र में पिरोना होगा। कार्यक्रम का संचालन कैप्टन अशोक गुलाटी द्वारा किया गया। अध्यक्षता सुषमा सर्राफ ने की। सभी अतिथियों को बिस्मिल स्मृति चिन्ह, शॉल एवं सत्यार्थ प्रकाश भेंट किया गया।

– अशोक गुलाटी, नोएडा

जम्मू में योग साधना शिविर का भव्य आयोजन

सुप्रसिद्ध आनन्द धाम आश्रम गढ़ी का शरदकालीन योग ध्यान साधना शिविर 22 से 29 सितम्बर तक आश्रम के मुख्य संरक्षक एवं निर्देशक आर्यजगत के ख्याति प्राप्त वैदिक प्रवक्ता मनीषी तथा अनेक ग्रन्थों के रचयिता और साहित्य अकादमी सहित अनेक पुरस्कारों से सम्मानित पूज्यपाद महात्मा चैतन्यमुनि के सान्निध्य में आयोजित किया जायेगा। शिविर में सामवेद पारायण यज्ञ के अतिरिक्त दर्शन ग्रन्थों के पठन–पाठन एवं शंका समाधान और भजनों प्रवचनों आदि का कार्यक्रम भी रहेगा। शिविर पूर्णतः निःशुल्क होगा। शिविर में भाग लेने हेतु चलभाष – 09419107788 पर सम्पर्क कर सकते हैं।

– भारत भूषण आनन्द, गढ़ी, उधमपुर, जम्मू कश्मीर

सच्ची पंचायतन पूजा

सच्ची पंचायतन वेदोक्त और वेदानुकूलोक्त देवपूजा और मूर्तिपूजा क्या है, सुनो! प्रथम माता, दूसरा पिता, तीसरा आचार्य, चौथा अतिथि, पांचवां स्त्री के लिए पति और पुरुष के लिए स्व–पत्नी पूजनीय है। ये पांच मूर्तिमान देव, जिनके संग से मनुष्य देह की उत्पत्ति, पालन, सत्यशिक्षा, विद्या और सत्योपदेश की प्राप्ति होती है। ये ही परमेश्वर को प्राप्त होने की सीढ़ियाँ हैं।

– महर्षि दयानन्द सरस्वती

NDPSo on 2/3 अगस्त, 2013 वैदिक सार्वदेशिक 01 से 07 अगस्त, 2013
प्रकाशन की तिथि : 01 अगस्त, 2013
पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/12-14
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2012-14]

इस स्वयंवर में आना इतना आसान नहीं

– अर्चना चतुर्वेदी

हमारे देश में लड़के का बाप बनना अमेरिका का राष्ट्रपति बनने से भी ज्यादा बड़ी बात है। एक पोते का मुँह देखने के लिए 80 साल की बुढ़िया भी भगवान से अपने लिए उम्र मांगती है। भले ही पोते के चक्कर में बेटियों की लाइन लगे या उनकी हत्या हो जाए, कोई फर्क नहीं पड़ता और तो और बेटे की माँ तो ऐसे इतराती है मानो नोबेल प्राइज जीत लिया हो। इसी कारण लोगों ने कन्या भ्रूण हत्या तक शुरू कर दी। लेकिन इन अक्ल के दुश्मनों से कोई पूछे कि बेटियाँ ही नहीं

होंगी तो बेटों का भी क्या करेंगे?उनकी शादी किसके साथ करेंगे?

आज की तारीख में लड़कियाँ लड़कों के अनुपात में कम हो गई हैं और इसी स्पीड से लोग लड़कियों को मारते रहे तो क्या होगा?कभी ये सोचा है कि जिनके पास बेटी होगी उसके भाव कितने बढ़ जायेंगे, उल्टा दहेज देकर भी बेटों की शादी नहीं कर पाओगे। हो सकता है तब प्राचीन युग फिर लौट आए। वह युग, जब एक पत्नी पाने के लिए कितने पापड़ बेलने पड़ते थे। तब राजकुमारियों के स्वयंवर रचाए जाते थे। एक राजकुमारी के लिए अनेक राजे–महाराजे आते थे। जो जीतता उसी के गले में वरमाला डाली जाती। कभी शिव का धनुष उठाओ तो कभी मछली की आँख में तीर मारो तो कभी युद्ध लड़ो, तब कहीं जाकर पत्नी मिलती थी।

हो सकता है अब फिर स्वयंवर करना पड़े। पर आज के दौर के स्वयंवर अलग किस्म के होंगे। चूंकि लड़कियाँ कम होंगी तो स्वयंवर के विज्ञापन अखबार में आयेंगे या टीवी पर और कम्पीटीशन तो इतना तगड़ा होगा कि एक लड़की के लिए एक–एक लाख लड़के पहुँच जायेंगे। तब स्वयंवर कई दौर में होगा। हो सकता है आईपीएल की तर्ज पर हो। तब क्वार्टर फाइनल, सेमी फाइनल और फाइनल, कई राउंड होंगे। जिस तरह आईआईटी या आईएएस के लिए कोचिंग ली जाती है, तब स्वयंवर में पास होने के लिए कोचिंग क्लासेज होंगी। आइडियल दूल्हे की तलाश कार्यक्रम का प्रसारण टीवी पर होगा। राखी का स्वयंवर टाइप। भव्य आयोजन होगा जिसका खर्चा प्रत्याशियों से रजिस्ट्रेशन राशि के रूप में वसूला जायेगा। अब भई जिसकी जेब और कलेजे में दम होगा बार–बार रजिस्ट्रेशन देने का और रिजेक्ट होने का, वो ही तो पहुँच सकेगा। आज एक–एक लड़की को दस–दस लड़के रिजेक्ट करते हैं, तब एक लड़की दस–दस हजार लड़कों को रिजेक्ट करेंगी। रजिस्ट्रेशन फॉर्म में प्रश्न कुछ इस तरह के होंगे –

1. लड़के की आमदनी कितनी है?आमदनी के सोर्सेज क्या–क्या हैं?
2 घर किस एरिया में है और किस साइज का है?
3. घर में कितनी गाड़ियाँ हैं और कौन सी?
4. कितने नौकर–चाकर हैं?
5. कितने भाई हैं। भाइयों का करैक्टर कैसा है?कोई टपोरी तो नहीं?कोई किसी मामले में जेल तो नहीं गया?
6. माँ–बाप का स्वभाव कैसा है?कहीं माँ ज्यादा झगड़ालू तो नहीं?

कुछ लड़के तो इंडियन आइडल की तर्ज पर पहले राउण्ड में ही लुढ़क जायेंगे। जो आगे जायेंगे उनके लिए तगड़ी परीक्षाएँ होंगी, उनकी चाल, उनका पहनावा उनका सलीका सब देखा जायेगा। उन्हें क्या–क्या काम आते हैं?लड़की को हर तरीके से खुश रख पायेंगे या नहीं, हर बात पर पैनी नजर से टेस्टिंग होगी। सोचिए, सब परीक्षा पास करके जिसका ब्याह होगा वो कितना प्रसिद्ध हो जायेगा, हर अखबार हर चैनल में उसके इंटरव्यू आयेंगे। लोग चर्चा करेंगे कि उसके पास तो अपनी बीवी है।

लोग उसे बीवी वाला कहेंगे और ईर्ष्या करेंगे। वो सिलेब्रिटी हो जायेगा। लोग उसके ऑटोग्राफ लेंगे। वो स्वयंवर में पास होने के टिप्स देगा। हो सकता है वो अपनी कोचिंग ही खोल ले। जाहिर है जिसके घर बेटी पैदा होगी उसे भाग्यशाली माना जायेगा। बेटा पैदा होने पर उलाहने सुनने को मिलेंगे। लोग बेटी के लिए व्रत–उपवास रखेंगे तीर्थयात्राएँ करेंगे। तो क्या आप चाहते हैं कि ऐसा हो?अब भी सुधर जाइऐ। देर नहीं हुई।

– नवभारत टाइम्स से साभार

प्रतिष्ठा में:–

अवितरण की दशा में लौटाएँ–
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन,
(रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002

वैदिक सार्वदेशिक के आजीवन सदस्यों से विनम्र निवेदन

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित, वैदिक संस्कृति का उद्घोषक पत्र "वैदिक सार्वदेशिक" पूरे विश्व में बसे करोड़ें आर्यजनों का लोकप्रिय एवं मार्ग दर्शक पत्र है। हमारा यह निरन्तर प्रयास रहता है कि इस पत्र के माध्यम से महर्षि दयानन्द सरस्वती के अमूल्य विचारों को जन-जन तक पहुँचाया जाये और मानव मात्र को संस्कारित कर "सादा जीवन उच्च विचार" की संस्कृति को बढ़ावा दिया जाये। इस कार्य में हमें आप सबका सहयोग अपेक्षित है।

यह अत्यन्त प्रसन्नता की बात है कि आप 20 अथवा उससे अधिक वर्ष पूर्व सभा के मुख पत्र के 200 अथवा 250/- रुपये देकर आजीवन सदस्य बनें थे और तब से लेकर निरन्तर आपको यह पत्र नियमित रूप से भेजा जा रहा है। आपको ज्ञात है कि इस मँहगाई के युग में पत्रिका का प्रकाशन कितना कठिन हो गया है। अतः आपसे विनम्र प्रार्थना है कि "वैदिक सार्वदेशिक का आजीवन सदस्यता शुल्क जो मात्र 2500/- रुपये है। इसे आप सार्वदेशिक सभा के सहयोगार्थ एकबार पुनः आजीवन सदस्यता के रूप में भेजने का कष्ट करें जो महानुभाव पुराने आजीवन सदस्य हैं उनके लिए विशेष शुल्क मात्र 2000/- रुपये निर्धारित किया गया है जिसे भेजकर कृतार्थ करें। आपका यह सहयोग महर्षि की विचारधारा के प्रचार-प्रसार में जहाँ आपको सहयोगी बनायेगा वहीं हमें सम्बल भी प्रदान करेगा।

– सम्पादक

पाठकों के पत्र तथा प्रतिक्रिया

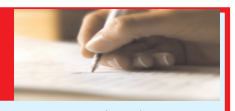

वैदिक सार्वदेशिक के 4 से 10 जुलाई के अंक में स्वामी अग्निवेश जी का लेख "आओ धर्म की चर्चा करें" प्रकाशित हुआ है इसे पढ़कर इसके शेष भाग को पढ़ने की उत्कंठा चरम पर पहुँची और अगले अंक का बेसब्री से इन्तजार करना पड़ा। आज ही अगला अंक प्राप्त हुआ है और पढ़कर चित्त में आनन्द का अनुभव हुआ है। आज धर्म को बाहरी आडम्बरों से जोड़ दिया गया है देश में पूंजीवाद और उपभोक्तावाद का वर्चस्व बढ़ रहा है तथा नैतिक मूल्यों में निरन्तर गिरावट हो रही है जिसके कारण आज के युवा दिग्भ्रमित हैं तथा मध्यम वर्ग स्वार्थी हो गया है। यह सब वास्तविक धर्म को न अपनाने की वजह से हो रहा है। स्वामी जी ने अपने लेख में वर्तमान परिस्थितियों में धर्म की सच्चाई को उजागर किया है उन्होंने लिखा है कि "मुट्ठी भर लोग जिन्होंने धर्म की एकांगी साधना का ढोंग किया वे धर्म के साथ–साथ ईश्वर के भी ठेकेदार हो गये और ऐसे लोग छा गये जिन्होंने धर्म को, ईश्वरोपासना को कर्मकाण्डों को जटिल तथा दुरूह बनाने के साथ–साथ उन पर अपना जन्मना एकाधिकार स्थापित कर लिया।" स्वामी जी का यह कथन अक्षरशः सत्य है। अभी केदारनाथ में आई भीषण त्रासदी के समय में भी मन्दिर के मुख्य पुजारियों और शंकराचार्य में एकाधिकार को लेकर वाक्युद्ध छिड़ा था। मेरे विचार से धर्म का अर्थ निष्काम कर्म से अपने कर्तव्यों का पालन करना है। संसार की बनावट तथा उसके गुण, कर्म, स्वभाव को देखने से पता चलता है कि उसका बनाने वाला कोई निर्विकार सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञ ईश्वर ही हो सकता है जो घट–घट मे व्याप्त हैं।

स्वामी जी का यह लेख धर्म के वास्तविक अर्थ तथा उसके लाभों को प्रदर्शित कर रहा है। प्रभु से प्रार्थना है कि हम सबको ऐसी सन्मति, सामर्थ्य और सदिच्छा प्रदान करें कि हम सब स्वामी अग्निवेश जी के मतानुसार वैदिक धर्म को पुनर्जीवित करने तथा प्रसारित करने के कार्य में एकजुट होकर लग जायें।

– वेद प्रकाश शर्मा, कनखल, हरिद्वार

वैदिक सार्वदेशिक में प्रकाशित लेख "हमारे राज में दारू नहीं, भ्रष्टाचार का तंत्र, भूख से मरने वालों को बचायें" लेख हृदय को छू गये जी करता है इनको टाइपिंग कराकर फोटो कापी बनवाकर प्रचारार्थ बाँटें किन्तु खेद है यहाँ पर टाइपिंग की कोई भी दुकान नहीं है नहीं तो टाइप करवा चुका होता। पाठकों के पत्र में मेरी यह प्रतिक्रिया अवश्य छापें अगर ऐसे ही लेख छपते रहे तो इस साप्ताहिक पत्र की माँग बहुत बढ़ेगी, इसका वार्षिक शुल्क बहुत अधिक कर दिया गया, लोग मगाना चाह रहे हैं शुल्क देखकर नहीं मगा पाते। 250/– वार्षिक शुल्क बहुत अधिक है और भी कई पत्र हैं उनसे कहीं अधिक इसका शुल्क हो गया है।

इस पर भी विचार करें। सभी अंक जो प्राप्त हुए हैं अत्यन्त शिक्षाप्रद हैं। बधाई स्वीकार करें।

रामदेव आर्य, आर्य समाज खुदागंज, शाहजहाँपुर–242305 (उत्तर प्रदेश)

निवेदन यह है कि वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक पत्र में अंग्रेजी अंकों का प्रयोग होता है। भारत सरकार ने अन्तर्राष्ट्रीय अंकों के नाम पर हिन्दी अंकों को समाप्त कर दिया है। आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने अपने ग्रन्थों में हिन्दी अंकों का प्रयोग किया है।

यदि आप उचित समझें तो वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक पत्र में हिन्दी अंकों का प्रयोग करने का कष्ट करना तथा पत्र का उत्तर देने की कृपा करना।

– श्रीमती कृष्णा देवी शर्मा, ग्राम एवं पो.–घटायन, जिला–मुजफ्फरनगर, (उत्तर प्रदेश)

एक बुराई दूसरी बुराई को जन्म देती है।

अंधविश्वास, रूढ़िवाद, अवतारवाद एवं पाखण्ड के खिलाफ
महर्षि दयानंद की सिंह गर्जना
– सत्यार्थप्रकाश का
११ वां समुल्लास
मंगाये, पढ़े, पढ़वायें, बाटें, भेंट करें
मात्र 20 रुपये सहयोग राशि
10 या अधिक प्रतियाँ मंगाने पर 50 प्रतिशत छूट
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"महर्षि दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली - 110002
दूरभाष :- 011-23274771, 23260985

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002
के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : Sarvadeshik@yahoo.co.in वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com

वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।